

मस्जिद में जाने के शर्इटाचार (2 का भाग 1)

रेटगि:

ववरण: ११११ ११११ ११ ११११ ११११ ११, ११११११ १११ ११११ ११ ११११११ १११११ ११ ११११ १११ ११ १११ ११ १११११११११ ११
११११११ ११११ ११ ११११ ११११ १११११ ११ ११११ ११११११११११ ११११११ ११ १११११११११

श्रेणी: [पाठ](#) > [पूजा के कार्य](#) > [प्रार्थना](#)

द्वारा: Imam Mufti

प्रकाशति हुआ: 08 Nov 2022

अंतमि बार संशोधति: 07 Nov 2022

उददेश्य:

·पश्चमि में मुस्लमि जीवन में मस्जिद की भूमिका को समझना।

·मस्जिद में जाने के 6 शर्इटाचार सीखना।

अरबी शब्द:

·?????? - प्रार्थना स्थल का अरबी शब्द।

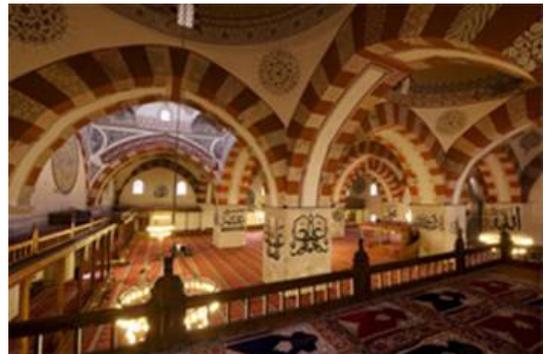
·???? - नमाज़ पढ़ाने वाला।

·???? - मुसलमानों को पांच अनवर्य प्रार्थनाओं के लिए बुलाने का एक इस्लामी तरीका।

·??-?????? ??????? - आप पर शांत और आशीर्वाद बना रहे।

·???? - इस्लामी अभवादन जैसे 'अस-सलामु अलैकुम'।

इस्लाम में ?????? मुस्लमि समाज की धड़कन है।
पश्चमि में अधिकतर मुसलमान जमीन खरीद कर उस पर
?????? बनाते हैं। कभी-कभी वे कोई चर्च या कोई अन्य
इमारत खरीद कर उसे ?????? में बदल देते हैं। कभी-
कभी वे एक कमरा, गैरेज, या एक तहखाना भी करिए पर
ले कर अस्थायी ?????? के रूप में उपयोग करते हैं।



सभी मामलों में, एक ?????? मुसलमानों के लिए वो जगह है जहां वे रोज़ाना नमाज़ पढ़ते हैं और एक दूसरे से मिलते हैं और मुस्लिम समुदाय के लिए फायदेमंद पूजा की अन्य गतिविधियों का संचालन भी करते हैं।

????? में की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण पूजा का कार्य शुक्रवार की नमाज़ है। कई ?????? में पांच दैनिक प्रार्थनाएं भी होती हैं। कई ?????? में एक समर्पति ???? होता है जो दैनिक प्रार्थना का नेतृत्व करता है। कई ?????? में समर्पति इमाम नहीं होता है, लेकिन नमाज़ के समय उपस्थिति लोगों में से कोई एक नमाज़ पढ़ाता है। इसी तरह नियमिति इमाम भी शुक्रवार का उपदेश देते हैं और नमाज़ पढ़ाते हैं या उपदेश देने वाले अलग-अलग हो सकते हैं जो सप्ताह के हिसाब से बारी-बारी शुक्रवार का उपदेश देते हैं।

पैगंबर मुहम्मद ने हमें बताया कि ?????? अल्लाह का घर है और इसमें जाने के कुछ शर्षटाचार और नियम हैं जसिं हर मुसलमान को सीख कर उसका पालन करना चाहिए।

????? में जाने के कुछ शर्षटाचार नमिनलखिति हैं:

1. पूजा पहली प्रार्थमकिता होनी चाहिए। ?????? जाने का प्रार्थमकि उद्देश्य आकाश और पृथ्वी के एक सच्चे ईश्वर की पूजा करना है। बाकी सब इसके बाद आते हैं। कई ?????? बास्केटबॉल, सामुदायिक रात्रिभोज, पकिनकि आदि जैसे गेमगि और सामाजिक कार्यक्रम करवाती है। ये सभी सार्थक हैं, लेकिन प्रार्थमकि उद्देश्य के बाद आते हैं। ?????? मुख्य रूप से अल्लाह की पूजा की जगह है और इसका मतलब आम तौर पर प्रार्थना और कुरआन पढ़ना है।

2. सामान्य नियम यह है कि एक मुसलमान को साफ-सुथरा होना चाहिए, साफ-सुथरे कपड़े पहनने चाहिए और दुर्गंध के साथ ?????? में नहीं जाना चाहिए। उसे हर उस चीज़ से बचना चाहिए जसिमें तीखी गंध हो जैसे ककिच्चा लहसुन और कच्चा प्याज खाना, या धूम्रपान करना।

मुसलमान को ?????? में आने के लिए साफ कपड़े और साफ मोजे पहनने चाहिए। बुरी गंध न केवल साथी लोगो को परेशान करती है, बल्कि वहां उपस्थिति स्वर्गदूतों को भी नापसंद होती है। याद रखें कि ?????? अल्लाह का घर है।

यदि कोई व्यक्ति ऐसा काम करता है जसिसे उसको पसीना आता है या अन्य शारीरिक गंध आती है, तो उसे ?????? में आने से पहले स्नान करना चाहिए और कपड़े बदलने चाहिए। पैगंबर मुहम्मद ने कहा:

"जो कोई भी लहसुन या प्याज खाये, तो वो हमारी ?????? से दूर रहे, क्योंकि आदम के बच्चों को जो बुरा लगता है, उससे स्वर्गदूत भी नाराज़ होते हैं।" (सहीह मुस्लिम)

3. एक मुसलमान को ?????? में प्रवेश करते समय पहले अपना दाहनि पैर रखना चाहिए, और फिर वह पढ़ना चाहिए जो पैगंबर मुहम्मद ने बताया था:

“अल्ला-हुम्मफ-तहली अबवाबा रहमतकि।”

“ऐ अल्लाह, मेरे लिए अपनी दया के द्वार खोल दो।”

यह पढ़ना वैकल्पिक है, हालांकि यह पढ़ना एक पुरस्कृत कार्य है।

पैगंबर को हर कार्य को अपने दाहनि हिस्से से शुरुआत करना पसंद था। पैगंबर मुहम्मद के प्रसिद्धि साथी इब्न उमर पैगंबर की नकल करते और ?????? में प्रवेश करते समय सबसे पहले अपना दाहनि पैर रखते थे, और जब वह ?????? से बाहर निकलते तो सबसे पहले अपना बायां पैर बाहर निकलते थे।
(सहीह अल-बुखारी)।

4. कालीन को साफ रखने के लिए, प्रार्थना कक्ष में प्रवेश करने से पहले अपने जूते उतार देना उचित है। यह बच्चों के लिए भी लागू होता है, जो पूरे कालीन पर गंदगी कर सकते हैं और उन्हें प्रार्थना कक्ष के अंदर इधर-उधर भागना भी नहीं चाहिए।

कई मस्जिदों में जूतों के लिए एक रैक होता है, जिसका इस्तेमाल वॉकवे और अन्य जगहों पर जूतों के स्थान को साफ रखने के लिए किया जाना चाहिए। इससे बाद में जूते दूँढना भी आसान हो जाता है।

5. एक मुसलमान को मस्जिद में प्रवेश करते ही उपस्थिति लोगों को "अस-सलामु अलैकुम" कहकर अभिवादन करना चाहिए, भले ही वह देखे कलोग प्रार्थना कर रहे हैं। उसे जोर से कहने की जरूरत नहीं है, धीमे स्वर में कह देना ही काफी है। पैगंबर मुहम्मद के साथी पैगंबर को "अस-सलामु अलैकुम" कहते जब वो प्रार्थना कर रहे होते, और पैगंबर एक इशारे से जवाब देते थे। इसके बारे में कई उल्लेख हैं। उदाहरण के लिए, पैगंबर के एक साथी सुहैब ने कहा: "मैं अल्लाह के दूत के पास से गुजरा जब वह प्रार्थना कर रहे थे और उन्हें सलाम किया, और उन्होंने एक इशारे से मुझे जवाब दिया।" (नसाई)

एक अन्य उदाहरण में, इब्न उमर ने पैगंबर मुहम्मद के एक अन्य साथी बलाल से पूछा, 'जब पैगंबर प्रार्थना कर रहे थे तो सलाम करने वाले साथियों को पैगंबर ने किस तरह जवाब दिया था?' बलाल ने कहा: "अपनी हथेली फैलाकर।" (तरिम्ज़ी)

6. एक मुसलमान को शुक्रवार की नमाज़, नियमति नमाज़, या व्याख्यान और कक्षाओं में भाग लेने के लिए समय का पाबंद होने का प्रयास करना चाहिए। देर से आने से पहले से चल रही कक्षा बाधति होती है, और यह

शकिषक और बाकी कक्षा के लिए असभ्य है। बेशक, शुक्रवार की नमाज के समय मस्जिद के दरवाजे पर स्वर्गदूत बैठते हैं जो लिखते हैं कि कौन आया, और अज्ञान के बाद वे उपदेश सुनने के लिए अंदर चले जाते हैं। और अगर आप अज्ञान के बाद आते हैं, तो आपका नाम नहीं लिखा जाता है!

इस लेख का वेब पता

<https://www.newmuslims.com/hi/articles/151>

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।